IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

बढ़ता शहरीकरण

Dr.Ravin Kumar

Assistant Professor, Geography, Govt. Girls College, Tapukra, Alwar, Rajasthan, India

सार

शहरी क्षेत्रों के भौतिक विस्तार (क्षेत्रफल, जनसंख्या आदि का विस्तार) शहरीकरण (Urbanisation) कहलाता है। यह एक वैश्विक परिवर्तन है। संयुक्त राष्ट्र संघ की परिभाषा के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का शहरों में जाकर रहना और काम करना भी 'शहरीकरण' है।

शहरीकरण या नगरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक समाज के समुदाय के आकार और शक्ति में वृध्दि होती रहती है जब तक की वे संपूर्ण जनसंख्या के अधिकांश भाग को सम्मिलित नहीं कर लेते हैं और सम्पूर्ण समाज पर प्रकार्यात्मक और सांस्कृतिक आधिपत्य स्थापित नही कर लेते।

किसी राष्ट्र की जनसंख्या का बढ़ता हुआ आकार जब शहर की तरफ निवास के लिए जमा होता है तो उसे नगरीकरण या "शहरीकरण" कहते है। वैसा प्रक्रिया जिसके अंतर्गत शहरों का अधिक पैमाने पर विस्तार होता है, शहरीकरण कहलाता है ।

उपरोक्त आधार पर यह स्पष्ट है कि शहरीकरण वास्तव में एक सतत परिवर्तनशील प्रक्रिया है, जो ग्रामीण और शहरी जीवन के बीच एक प्रकार का अंतर पैदा करती है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन को भी समझा जा सकता है।

परिचय

शहरीकरण पिछली सदी और वर्तमान काल की सर्वाधिक प्रमुख घटनाओं में से एक है जिससे भूमि उपयोग में वैश्विक स्तर पर व्यापक परिवर्तन आये हैं। नगर एक अत्यधिक संकुचित क्षेत्र में अत्यधिक संकेंद्रित ऊर्जा उपयोग का केन्द्र होता है और अपनी बहुत सी आवश्यकताओं के लिये अपने इर्द-गिर्द के क्षेत्र पर आश्रित होता है, अतः नगरीयकरण का भूमि उपयोग पर पड़ने वाला प्रभाव केवल उसे क्षेत्र में नहीं पड़ता जो नगर के अंतर्गत आता है बल्कि नगर के पश्च-प्रदेश में भी व्यापक भूमि उपयोग परिवर्तन होते हैं।[1,2,3]

नगरीकरण और भूमि उपयोग परिवर्तनों को समेकित रूप से जलवायु परिवर्तन के सबसे प्रमुख कारक के रूप में भी देखा जाता है किन्तु इनमें से कौन कितना प्रभाव डालता है यह मापन थोड़ा मुश्किल है।

चाहे शहरी चकाचौंध का आकर्षण हो या रोटी कमाने की मजबूरी लेकिन सच यह है कि दुनिया की करीब आधी आबादी शहरों में बसने लगी है। वातावरण में हर साल कार्बन डाईआक्साइड के रूप में घुलने वाले जहर की 80 फीसदी मात्रा इन्हीं लोगों की वजह से है। विशेषज्ञ बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि धरती की जलवायु का हश्र इसी बात पर निर्भर करता है कि हम अपने शहरों को कैसे सजाते-संवारते हैं। वे यह भी कहते रहे हैं कि शहरों का भविष्य इसी बात पर निर्भर है कि अगले 20 साल में शहरों पर लगातार बढ़ रहे बोझ को किस तरह नियंत्रित किया जाता है।

हम जैसों के लिए ज्यादा चिंता : भारत जैसे विकासशील देशों के संदर्भ में यह चेतावनी कुछ ज्यादा ही गंभीर है। वजह यह कि वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट के मुताबिक विकासशील देशों में शहरी आबादी साढ़े तीन फीसदी सालाना की दर से बढ़ रही है, जबकि विकसित देशों में यह दर एक फीसदी से भी कम है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के मुताबिक अगले 20 सालों में शहरों की आबादी जितनी बढ़ेगी, उसका 95 फीसदी बोझ विकासशील देशों पर ही पड़ेगा। यानी 2030 तक विकासशील देशों में दो अरब और लोग शहरों में रहने लगेंगे।

संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि अगर शहरों पर बढ़ रहे बोझ और प्रदूषण को नियंत्रित नहीं किया गया तो एक करोड़ से ज्यादा आबादी वाले बड़े शहरों पर भविष्य में बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं का खतरा काफी बढ़ जाएगा। दुनिया के ऐसे 21 बड़े शहरों में से 75 फीसदी विकासशील देशों में ही हैं। कुछ आंकड़ों के मुताबिक 2015 तक ऐसे 33 में से 27 शहर विकासशील देशों में होंगे।

बढ़ती संख्या, घटती सुविधाएं: शहरों पर ज्यों-ज्यों बोझ बढ़ रहा है, लोगों को मिलने वाली सुविधाएं घट रही हैं। बेहतर जिंदगी की चाह में लोग शहरों की ओर भागते हैं, लेकिन वास्तव में उन्हें मुसीबतें ही मिलती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक विकासशील देशों में

70 फीसदी से ज्यादा [करीब 90 करोड़] आबादी झुग्गी-झोपड़ियों में रहती है। वर्ष 2020 तक यह संख्या दो अरब हो जाने का अनुमान है। ऐसे में जहां उनके लिए स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां बढ़ती हैं, वहीं पर्यावरण को भी गंभीर नुकसान पहुंचता है।[5,7,8]

प्रदूषण की कीमत: शहरों में विकास और बढ़ती जनसंख्या के चलते प्रदूषण भी खूब बढ़ रहा है। तेजी से विकास कर रहे चीन के खाते में दुनिया के 20 सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से 16 शहर हैं। प्रदूषण के चलते शहरों में हर साल करीब दस लाख लोग समय से पहले मर जाते हैं। इनमें ज्यादातर विकासशील देशों के ही होते हैं।[2,3,5]

विचार-विमर्श

देश की आबादी के दो रुझान स्पष्ट हैं। पहला यह कि शहरों की आबादी बढ़ रही है और दूसरा यह कि युवाओं की आबादी बढ़ रही है। दूसरे रुझान का संबंध भी शहरीकरण से ही है, क्योंकि युवा को अंतत: शहरों की ओर ही आना है।

आजादी के बाद लगातार शहरीकरण बढ़ रहा है। गांवों से आबादी का बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा है। 1991 की जनगणना के वक्त यह 27 प्रतिशत था तो 2001 में 29 प्रतिशत हो गया था। इस बार यह और बढ़ गया है। हमें यह बहुत ज्यादा दिखाई देता है, लेकिन विकास के लिए यह आवश्यक है। जो भी देश अमीर हैं, विकसित हैं, वहां शहरी आबादी का प्रतिशत 70-90 प्रतिशत तक है।

देश के आर्थिक विकास में शहरों का योगदान भी ज्यादा होता है। पश्चिम की तुलना में हमारे यहां आज भी शहरी आबादी 30-35 प्रतिशत ही है। हमें वह बहुत ज्यादा इसलिए दिखाई पड़ती है, क्योंकि हमारे यहां शहरीकरण तो हो गया, लेकिन उस अनुपात में सुविधाएं नहीं बढ़ीं, आधारभूत संरचना का विकास नहीं हुआ।

बिजली-पानी, सैनिटेशन, परिवहन और सड़कों की उचित व्यवस्था नहीं है। ग्लोबलाइजेशन के साथ शहरीकरण तो बढ़ना ही है, साथ ही गांवों से आबादी का पलायन भी बढ़ना ही है। यह रफ्तार और बढ़ेगी। इसलिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि आने वाले समय में हमारी सरकार को बुनियादी संरचना खड़ी करनी होगी, जनता को मूलभूत सुविधाएं देनी होंगी।

चूंकि शहरीकरण का सबसे ज्यादा लाभ निजी क्षेत्र को मिलेगा, इसलिए उसकी भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होगी। यदि बुनियादी सुविधाओं के मोर्चे पर हम कामयाब हो गए तो हम टिकाऊ आबादी विकास को प्राप्त कर लेंगे।[9,10,11]

शहरीकरण से तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में आबादी की आवाजाही से है। यह मूल रूप से शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के अनुपात में क्रमिक वृद्धि है। शहरीकरण समकालीन दुनिया में काफी लोकप्रिय प्रवृत्ति है। इसके अलावा, लोग ज्यादातर काम के अवसरों और बेहतर जीवन स्तर के कारण शहरीकरण में इजाफा करते हैं। विशेषज्ञ की भविष्यवाणी के अनुसार, 2050 तक विकासशील दुनिया का लगभग 64% और विकसित दुनिया का 86% हिस्सा शहरीकृत होगा।[1,2]

शहरीकरण के लाभ

- सबसे पहले, शहरी क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में संसाधन प्रदान करने में बहुत अधिक कुशल हैं। शहरी क्षेत्रों में आवास, स्वच्छ पानी और बिजली जैसी महत्वपूर्ण और बुनियादी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होते हैं।
- शहरी क्षेत्रों में लोगों को विभिन्न महत्वपूर्ण सेवाओं तक पहुंचना काफी आसान लगता है। सबसे उल्लेखनीय, ये सेवाएं उच्च-गुणवत्ता वाली शिक्षा, विशेषज्ञ स्वास्थ्य देखभाल, सुविधाजनक परिवहन, मनोरंजन आदि हैं। इसके अलावा, कुछ या सभी सेवाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में अनुपलब्ध हैं।
- शहरी क्षेत्र बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। ये रोजगार के अवसर औद्योगीकरण और व्यवसायीकरण के परिणामस्वरुप हैं।
- शहरी क्षेत्र ज्ञान के निर्माता और प्रसारकर्ता के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसकी वजह है, अत्यधिक जुड़ी शहरी दुनिया। सबसे उल्लेखनीय, शहरी क्षेत्रों में लोगों की भौगोलिक निकटता विचारों के प्रसार में मदद करती है।
- शहरी क्षेत्र तकनीकी विकास के लाभों का आनंद लेते हैं। शहरी क्षेत्रों में कई प्रकार की प्रौद्योगिकियां लागू होती हैं। इसके अलावा, शहरी लोग नवीनतम तकनीक के संपर्क में जल्दी आते हैं। इसके विपरीत, कई ग्रामीण व्यक्ति कई प्रकार की तकनीकों से अनभिज्ञ रहते हैं।

उपसंहार

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

शहरीकरण एक प्रक्रिया है जो निरंतर वृद्धि पर है। इसके अलावा, शहरीकरण ग्रामीण संस्कृति को शहरी संस्कृति में बदलना सुनिश्चित करता है। इन सबके बावजूद सरकार को तेजी से बढ़ते शहरीकरण के लिए सतर्क रहना चाहिए। एक पूरी तरह से शहरीकृत दुनिया हमारी दुनिया की अंतिम नियति की तरह दिखती है।[1,2,3]

शहरीकरण या नगरीकरण आर्थिक उन्नति की सबसे बड़ी विशेषता है। अर्थव्यवस्था की क्रमिक विकास के साथ, शहरीकरण की प्रक्रिया कुछ औद्योगिक शहरी केंद्रों की वृद्धि के साथ-साथ ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में अधिशेष आबादी के पलायन पर निर्भर करती है। उच्च शिक्षा और उच्च स्तरीय सम्पन्न जीवनस्तर अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को आकर्षित करता है।

शहरीकरण के कारण

- सबसे पहले, राजनीतिक कारण शहरीकरण में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। राजनीतिक अशांति के कारण कई लोग शहरी क्षेत्रों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इसलिए, कई परिवार भोजन, आश्रय और रोजगार की तलाश में शहरी क्षेत्रों में जाते हैं।
- शहरीकरण का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण आर्थिक कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी एक व्यापक घटना है। किसानों को पर्याप्त पैसा कमाने और जीवन यापन करने में बहुत मुश्किल होती है। नतीजतन, ग्रामीण लोग बेहतर रोजगार के अवसरों की तलाश में शहरी क्षेत्रों का रुख करते हैं।
- शिक्षा शहरीकरण का एक मजबूत कारण है। शहरी क्षेत्र उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान करते हैं। इसके अलावा, शहरीकरण विश्वविद्यालयों और तकनीकी कॉलेजों में अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करता है। इस तरह की उन्नत शिक्षा के अवसर ग्रामीण क्षेत्रों में कई युवा लोगों को शहरी क्षेत्रों में जाने के लिए आकर्षित करते हैं।
- पर्यावरणीय गिरावट भी शहरीकरण में योगदान करने में एक भूमिका निभाती है। वनों की कटाई कई किसान परिवारों के प्राकृतिक आवास को नष्ट कर देती है। इसके अलावा, खनन और औद्योगिक विस्तार भी किसान परिवारों के प्राकृतिक आवास को नुकसान पहुंचाते हैं।
- सामाजिक कारण शहरीकरण का एक और उल्लेखनीय कारण है। कई युवा ग्रामीण लोग बेहतर जीवन शैली की तलाश में शहरी क्षेत्रों में पलायन करते हैं। इसके अलावा, कई युवा ग्रामीण क्षेत्रों की रूढ़िवादी संस्कृति से बचना चाहते हैं। अधिकांश शहरी क्षेत्र अधिक आसान उदारवादी जीवन शैली प्रदान करते हैं। अधिकांशतः शहरों में युवाओं को आकर्षित करने के लिए बहुत सी चीजें होती हैं।[1,2]

सामाजिक और आर्थिक दबावों के कारण, पिछड़े गाँवों के लोग नौकरी की तलाश में शहरीकृत केंद्रों की ओर रुख करने लगते हैं। जहाँ साथ ही नव स्थापित उद्योग और सहायक गतिविधियाँ उन लोगों को नौकरी के अवसर लगातार दे रही हैं जो शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं।

यदि औद्योगिक विकास तेज है तो शहरीकरण की गति तेज है। शहरीकरण की गति धीरे-धीरे कम हो जाती है, जब देश की कुल आबादी में शहरी आबादी का अनुपात बहुत अधिक हो जाता है।

प्रस्तावना

भारत में, शहरीकरण की ओर बढ़ते रुझान को इस वर्तमान शताब्दी की शुरुआत से ही देखा गया है। ग्रामीण-शहरी संरचना पर जनगणना के आंकड़ों से भारत में शहरीकरण की दर में लगातार वृद्धि होती आयी है और विशेष रूप से वर्तमान 21 वीं सदी के उत्तरार्ध (second half) के दौरान।

तीव्र शहरीकरण के परिणाम:

तेजी से बढ़ता शहरीकरण स्वस्थ और अस्वास्थ्यकर परिणाम और पहलु दोनों के अधीन है।

(i) स्वस्थ पहलू:

- तेजी से फैलते औद्योगीकरण से कई औद्योगिक शहरों का स्थापना और विकास हुआ है। विनिर्माण इकाइयों के साथ, उन शहरी क्षेत्रों में सहायक और सेवा क्षेत्र बढ़ने लगे।

- दूसरे, नए और अतिरिक्त रोजगार के अवसर शहरी क्षेत्रों में अपनी नई विस्तार विनिर्माण और सेवा क्षेत्र इकाइयों में बनाए जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण-शहरी प्रवास और "औद्योगिकीकरण-शहरीकरण प्रक्रिया" स्थापित की जाती हैं।
- तीसरा, शहरों का विकास बाहरी अर्थव्यवस्थाओं को जन्म दे सकता है ताकि विभिन्न सेवाओं और गतिविधियों के लिए अर्थव्यवस्थाओं का लाभ उठा सके।

अंत में, शहरीकरण के परिणामों में परिवर्तन होता है और शहरी लोगों की मानसिकता में व्यवहार और उचित प्रेरणा में आधुनिकीकरण होता है जो अप्रत्यक्ष रूप से देश को तेजी से आर्थिक विकास प्राप्त करने में मदद करता है।

(ii) अस्वस्थ पहलू:

- हालाँकि अर्थव्यवस्था का विकास शहरीकरण से बहुत जुड़ा हुआ है, लेकिन इससे कुछ गंभीर समस्याएं पैदा हुई हैं। सबसे पहले, बढ़ते शहरीकरण शहरी क्षेत्रों में बढ़ती भीड़ के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। बहुत अधिक भीड़ के कारण ट्रैफिक जाम, आबादी की बहुत अधिक जमावट जैसी समस्याएं हुई हैं, जिसका प्रबंधन धीरे-धीरे बहुत मुश्किल और महंगा होता जा रहा है।
- दूसरे, बहुत अधिक जनसंख्या शहरीकरण का एक और अस्वास्थ्यकर पहलू है जो शहरी आवास, शिक्षा, चिकित्सा सुविधाओं, मलिन बस्तियों के विकास, बेरोजगारी, हिंसा, भीड़भाड़ आदि से संबंधित शहरी अराजकता पैदा करता है। इन सभी के परिणामस्वरूप मानव जीवन की गुणवत्ता में गिरावट होती हैं।[2,3]

अंत में, शहरीकरण के परिणामस्वरूप, बड़े पैमाने पर प्रवासन ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में होता है। ग्रामीण क्षेत्रों से सक्रिय जनसंख्या के इतने बड़े पैमाने पर प्रवासन से ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादकता में कमी आएगी, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिति खराब होगी। इस प्रकार, शहरीकरण, एक निश्चित बिंदु से परे, अस्वास्थ्यकर परिणाम होगा।

(iii) शहरी नीति के उपाय:

तीव्र शहरीकरण के अस्वास्थ्यकर परिणामों को ध्यान में रखते हुए, एक शहरी नीति तैयार करना काफी महत्वपूर्ण है जो न्यूनतम अवांछनीय प्रभावों के साथ शहरी विकास प्रदान कर सकता है।

जिन उपायों का बड़े पैमाने पर पालन किया जा सकता है, उनमें शामिल हैं :

(i) गैर-कृषि गतिविधियों के विकास के लिए देश की विकास योजनाओं के साथ शहरीकरण प्रक्रिया को एकीकृत करना, जैसे कि बाहरी अर्थव्यवस्थाओं की प्राप्ति के लिए विनिर्माण सेवाएं और बुनियादी ढाँचा।

(ii) इन बड़े आकार के शहरों के नुकसान को कम करने के लिए चयनात्मक शहरी विकास की व्यवस्था करना,

(iii) ग्रामीण जिलों को विकसित करने के लिए, अत्यधिक ग्रामीण जिलों के शहरों को विकसित करके, बड़े शहरों में और उसके आसपास उपग्रह टाउनशिप विकसित करना।

(iv) नगरीय सुविधाओं को पर्याप्त मात्रा में विकसित करके बड़े शहरी केंद्रों पर दबाव बढ़ाना ताकि शहरी जीवन को शांतिपूर्ण बनाया जा सके।

शहरीकरण बुरा नहीं है, किन्तु जैसे हर चीज की अति ख़राब होती है, वही स्थिति इसके साथ भी है। हमारा देश कृषि-प्रधान देश है, लेकिन शहरीकरण के फलस्वरुप कोई भी युवा गांवों में रहकर खेती नहीं करना चाहता, और न ही गांवों में रहना चाहता है। शहरों की चकाचौंध में वो खो सा गया है। उसे वास्तविकता का जरा सा भी भान नहीं है। कोई खेती नहीं करेगा, तो देश की जनता खाएगी क्या। आप शहरी हो या ग्रामीण, पेट भरने के लिए सबको भोजन की ही आवश्यकता होती है। और उसकी उगाही केवल किसान ही कर सकता है, जिसके लिए गांव में रहना जरुरी है।[5,7]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

परिणाम

भारत में तीव्रता से बढ़ता शहरीकरण एक अपरिहार्य चुनौती बन गया है। सेवा क्षेत्र के विकास के साथ शहरों पर जनसंख्या का दबाव और अधिक बढ़ता जा रहा है।

- दिल्ली दुनिया का छठा सबसे बड़ा महानगर है, इसके बावजूद यहाँ एक-तिहाई आवास स्लम क्षेत्र का हिस्सा हैं, जिनके पास कोई बुनियादी संसाधन भी उपलब्ध नहीं हैं।[7,8,9]

स्लम क्षेत्र

- स्लम क्षेत्र का आशय सार्वजनिक भूमि पर अवैध शहरी बस्तियों से है और आमतौर पर यह एक निश्चित अवधि के दौरान निरंतर एवं अनियमित तरीके से विकसित होता है। स्लम क्षेत्रों को शहरीकरण का एक अभिन्न अंग माना जाता है और शहरी क्षेत्र में समग्र सामाजिक-आर्थिक नीतियों एवं योजनाओं की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है।
- 'स्लम क्षेत्र' को प्रायः 'अराजक रूप से अधिग्रहीत, अव्यवस्थित रूप से विकसित और आमतौर पर उपेक्षित क्षेत्र के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जहाँ काफी अधिक आबादी निवास करती है।
- 'स्लम क्षेत्र' के अस्तित्व और तीव्र विकास को एक सामान्य शहरी घटना के रूप में देखा जाता है, जो कि दुनिया भर में प्रचलित है।

प्रमुख बिंदु

शहरीकरण

- शहरीकरण का आशय ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के पलायन, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के अनुपात में कमी और इस परिवर्तन को अपनाने हेतु समाज के तरीकों से है।
- शहरों को प्रायः तीव्र शहरीकरण के प्रतिकूल परिणामों जैसे- अत्यधिक जनसंख्या, आवास और बुनियादी सुविधाओं की कमी, पर्यावरण प्रदूषण, बेरोज़गारी तथा सामाजिक अशांति आदि का सामना करना पड़ता है।
- विकसित शहर के निर्माण के इस मॉडल में अनियोजित विकास भी शामिल होता है, जो अमीर और गरीब समुदाय के बीच व्याप्त द्वंद्व को मज़बूत करता है।
- इसके अलावा कोविड-19 महामारी ने शहरों में विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले शहरी गरीबों या झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों के लिये परेशानी को और गंभीर कर दिया है।

स्लम क्षेत्रों की स्थिति

- भारत में 13.7 मिलियन स्लम घरों में कुल 65.49 मिलियन लोग निवास करते हैं। लगभग 65% भारतीय शहरों के आसपास झुग्गियाँ और स्लम क्षेत्र मौजूद हैं, जहाँ लोग काफी घनी बस्तियों में रहते हैं।
    - 'नेशनल सर्विस स्कीम राउंड' (जुलाई 2012-दिसंबर 2012) के एक सर्वेक्षण के अनुसार, वर्ष 2012 तक दिल्ली में लगभग 6,343 स्लम बस्तियाँ थीं, जिनमें दस लाख से अधिक घर थे, जहाँ दिल्ली की कुल आबादी का 52% हिस्सा निवास करता था।

स्लम निवासियों पर कोविड-19 का प्रभाव

- वित्तीय असुरक्षा
    - भारत की लगभग 81 प्रतिशत आबादी अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य करती है। संपूर्ण कोविड लॉकडाउन के अचानक लागू होने से झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों की आजीविका काफी बुरी तरह प्रभावित हुई है।
    - पूर्व लॉकडाउन के बाद दिल्ली में भारी संख्या में 'रिवर्स माइग्रेशन' देखा गया, जब हज़ारों प्रवासी कामगार अपने गृहनगर वापस चले गए। इस दौरान लगभग 70% स्लम निवासी बेरोज़गार हो गए; 10% की मज़दूरी में कटौती हुई और 8% पर इसके अन्य प्रभाव देखे गए।[9,10]
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली और सामाजिक क्षेत्र योजना कवरेज:

- यद्यपि ग्रामीण निवासियों का एक बड़ा वर्ग सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के माध्यम से उपलब्ध खाद्यान्न के कारण महामारी से प्रेरित आर्थिक व्यवधान का सामना करने में सक्षम था, किंतु शहरी गरीबों तक ऐसे राशन की पहुँच न्यूनतम थी।
- सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को लेकर भी ग्रामीण गरीबों के बीच शहरी गरीबों की तुलना में बेहतर कवरेज था।
- शहरी क्षेत्रों में परिवारों के एक बड़े हिस्से के पास राशन कार्ड नहीं है।

- मौजूदा असमानताएँ:
  - कोविड-19 महामारी ने झुग्गियों और स्लम क्षेत्रों की चुनौतियों को और अधिक गंभीर रूप से उजागर किया है। इन क्षेत्रों में हाथ धोना और शारीरिक दूरी जैसे नियमों का पालन करना असंभव था।
  - दिल्ली में झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लगभग 21.8% परिवार सार्वजनिक नल जैसे साझा जल स्रोतों पर निर्भर हैं।
- पोषण और भूख:
  - पोषण की गुणवत्ता और मात्रा में गिरावट शहरी निवासियों के मामले में अधिक देखी गई और अधिकांश लोगों को भोजन खरीदने तक के लिये पैसे उधार लेने पड़ रहे थे।
  - कुल मिलाकर भूख और खाद्य असुरक्षा का स्तर काफी उच्च बना रहा, जहाँ स्थिति में सुधार की उम्मीद काफी कम थी और रोज़गार के अवसर प्रदान करने के साथ-साथ खाद्य सहायता प्रदान करने संबंधी उपायों की भी कमी थी।

स्लम विकास की उपेक्षा से उत्पन्न मुद्दे:

- रोगों के प्रति संवेदनशील:
  - स्लम क्षेत्रों में रहने वाले लोग टाइफाइड और हैजा जैसी जलजनित बीमारियों के साथ-साथ कैंसर व एचआईवी/एड्स जैसी अधिक घातक बीमारियों के प्रति काफी संवेदनशील होते हैं।[10,11,12]
- सामाजिक कुरीतियों के शिकार:
  - ऐसी बस्तियों में रहने वाली महिलाओं और बच्चों को वेश्यावृत्ति, भीख मांगने और बाल तस्करी जैसी सामाजिक बुराइयों का सामना करना पड़ता है।
    - इसके अलावा ऐसी बस्तियों में रहने वाले पुरुषों को भी इन सामाजिक बुराइयों का सामना करना पड़ता है।
- अपराध की घटनाएँ:
  - स्लम क्षेत्रों को आमतौर पर ऐसे स्थान के रूप में देखा जाता है, जहाँ अपराध काफी अधिक होते हैं। यह स्लम क्षेत्रों में शिक्षा, कानून व्यवस्था और सरकारी सेवाओं के प्रति आधिकारिक उपेक्षा के कारण है।
- गरीबी
  - एक विकासशील देश में झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले अधिकांश लोग अनौपचारिक क्षेत्र से अपना जीवन यापन करते हैं जो न तो उन्हें वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है और न ही बेहतर जीवन के लिये पर्याप्त आय उपलब्ध कराता है, जिससे वे गरीबी के दुष्चक्र में फँस जाते हैं।

सिफारिशें:

- कल्याण और राहत योजनाओं की दक्षता में तेज़ी लाना।
- मलिन बस्तियों में मुफ्त टीके, खाद्य सुरक्षा और पर्याप्त आश्रय सुनिश्चित करना।
- मलिन बस्तियों में स्वच्छता और परिवहन सुविधाओं में सुधार।
- क्लीनिक और स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थापना।
- गैर-लाभकारी संस्थाओं और स्थानीय सहायता निकायों की सहायता करना, जिनकी इन हाशिये के समुदायों तक बेहतर पहुँच है।

- लाभ अभीष्ट लाभार्थियों के एक छोटे से हिस्से तक ही पहुँच पाते हैं। अधिकांश राहत कोष और लाभ झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों तक नहीं पहुँचते हैं, इसका मुख्य कारण यह है कि इन बस्तियों को सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर मान्यता नहीं दी जाती है।
- भारत में उचित सामाजिक सुरक्षा उपायों का अभाव देखा गया है और इसका वायरस से लड़ने की हमारी क्षमता पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार शहरी नियोजन और प्रभावी शासन के लिये नए दृष्टिकोण समय की आवश्यकता है।

- टिकाऊ, मज़बूत और समावेशी बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिये आवश्यक कार्रवाई की जानी चाहिये। शहरी गरीबों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को बेहतर ढंग से समझने के लिये हमें 'ऊपर से नीचे के दृष्टिकोण' को अपनाने की आवश्यकता है।[11,12]

निष्कर्ष

शहरीकरण इस बात का अध्ययन है कि कस्बों और शहरों जैसे शहरी क्षेत्रों के निवासी निर्मित पर्यावरण के साथ कैसे बातचीत करते हैं । यह शहरी नियोजन , शहरी क्षेत्रों के डिजाइन और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने वाला पेशा, और शहरी समाजशास्त्र , एक शैक्षणिक क्षेत्र जो शहरी जीवन का अध्ययन करता है, जैसे विषयों का प्रत्यक्ष घटक है । [1] [2]

कई वास्तुकार , योजनाकार , भूगोलवेत्ता और समाजशास्त्री घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों में लोगों के रहने के तरीके की जांच करते हैं । शहरीकरण के अध्ययन के लिए विभिन्न सिद्धांतों और दृष्टिकोणों की एक विस्तृत विविधता है। [3] हालाँकि, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुछ संदर्भों में, शहरीकरण शहरी नियोजन का पर्याय है , और शहरीवाद एक शहरी योजनाकार को संदर्भित करता है ।

शहरीकरण शब्द की उत्पत्ति उन्नीसवीं सदी के अंत में स्पेनिश इंजीनियर-वास्तुकार इल्डेफोन्स सेर्डा के साथ हुई, जिनका इरादा शहर के स्थानिक संगठन पर केंद्रित एक स्वायत्त गतिविधि बनाना था। [4] 20वीं सदी की शुरुआत में शहरीकरण का उद्भव केंद्रीकृत विनिर्माण , मिश्रित उपयोग वाले पड़ोस , सामाजिक संगठनों और नेटवर्क के उदय से जुड़ा था , और जिसे "राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक नागरिकता के बीच अभिसरण " के रूप में वर्णित किया गया है। [5]

शहरीकरण को स्थान निर्माण और शहरव्यापी स्तर पर स्थान की पहचान के निर्माण के रूप में समझा जा सकता है , हालांकि 1938 की शुरुआत में लुई विर्थ ने लिखा था कि 'शहरीकरण को शहर की भौतिक इकाई के साथ पहचानना' बंद करना, 'एक से परे जाना' आवश्यक है। मनमानी सीमा रेखा ' और विचार करें कि कैसे ' परिवहन और संचार में तकनीकी विकास ने शहरी जीवन शैली को शहर की सीमा से परे भी काफी हद तक बढ़ा दिया है।[13]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. विर्थ, लुईस (1938)। "जीवन के एक तरीके के रूप में शहरीवाद" (पीडीएफ) । अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी ।
2. ^ "शहरीवाद" । ओबो . 2022-08-05 को पुनःप्राप्त .
3. ^ बार्नेट, जोनाथन (अप्रैल 2011)। "नवीनतम 60 शहरीवादों के लिए एक संक्षिप्त मार्गदर्शिका"। योजना . 77 (4): 19-21. आईएसएसएन 0001-2610 . ओसीएलसी 1762461 ।
4. ^ गुफाएँ, आरडब्ल्यू (2004)। शहर का विश्वकोश । रूटलेज। पी। 734. आईएसबीएन 978-0415862875.
5. ^ ब्लोकलैंड-पॉटर्स, तलजा, और सैवेज, माइक (2008)। नेटवर्कयुक्त शहरीकरण: शहर में सामाजिक पूंजी। एशगेट प्रकाशन।
6. ^ विर्थ, लुईस (1938)। "जीवन के एक तरीके के रूप में शहरीवाद" (पीडीएफ) । अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी । 44 (1): 1-24. डीओआई : 10.1086/217913 । आईएसएसएन 0002-9602 . एस2सीआईडी 145174761 ।
7. ^ डुपुय, गेब्रियल (2008)। शहरी नेटवर्क: नेटवर्क शहरीकरण । जे. वैन शाइक, आईटी क्लासेन, टेक्नीश यूनिवर्सिटिट डेल्फ़्ट। बाउकुंडे के फैकल्टीट। एम्स्टर्डम, नीदरलैंड: टेक्नी प्रेस। आईएसबीएन 978-90-8594-019-7. ओसीएलसी 179789433 ।
8. ^ ग्राहम, स्टीव; मार्विन, साइमन (2001)। स्प्लिंटरिंग अर्बनिज़्म: नेटवर्क्ड इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजिकल मोबिलिटीज़ एंड द अर्बन कंडीशन (पहला संस्करण)। लंदन: रूटलेज. डीओआई:10.4324/9780203452202। आईएसबीएन 978-0-203-45220-2.
9. ^ केलबॉघ, डगलस (2009), थ्री अर्बनिज्म्स एंड द पब्लिक रीयलम [आईएसबीएन गायब]
10. ^ नॉक्स, पॉल एल. (2010-07-12)। शहर और डिज़ाइन (पहला संस्करण)। रूटलेज। पी। 10. डीओआई : 10.4324/9780203848555 । आईएसबीएन 978-1-136-94917-3.
11. ^ क्राइगर, एलेक्स; सॉन्डर्स, विलियम एस. (2009-01-01)। शहरी डिज़ाइन . मिनेसोटा प्रेस के यू. पी। 113. आईएसबीएन 978-1-4529-1412-1.
12. ^ सोजा, एडवर्ड (2003)। "शहर को स्थानिक रूप से लिखना"। शहर . 7 (3): 269-280. डीओआई : 10.1080/1360481032000157478 । एस2सीआईडी 144964310 ।
13. ^ कैरी, जॉन (2018)। "डिज़ाइन जर्नीज़: लिज़ ओग्बू" । अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ ग्राफिक आर्ट्स ।

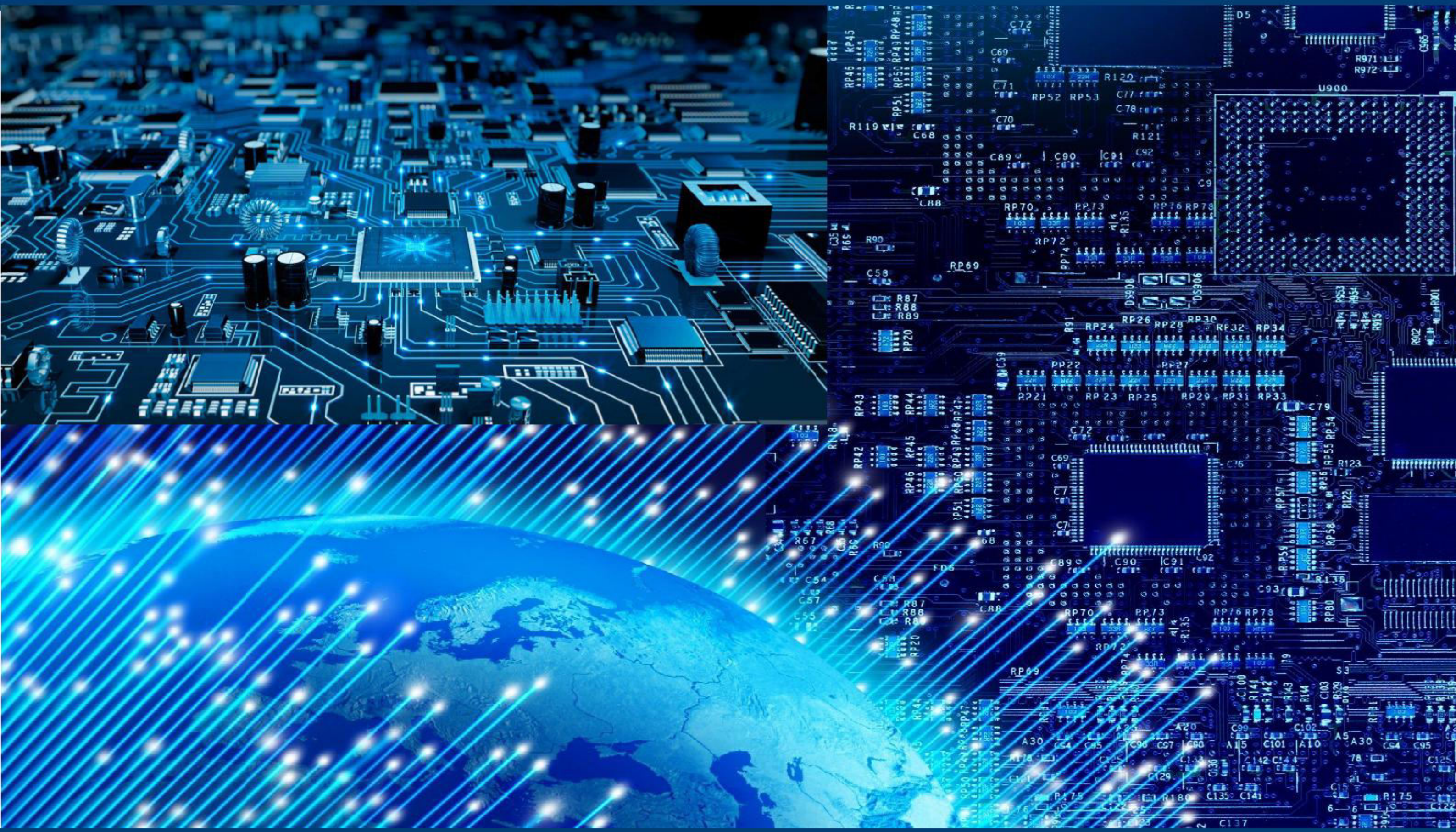

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com